**विश्‍व न्‍याय मन्दिर**

10 जुलाई 2014

विश्व के बहाईयों को,

परम प्रिय मित्रगण,

20 मार्च 2015 का सूर्यास्त 171वें बहाई वर्ष के समाप्त होने का संकेत देगा (अर्थात) बहाई युग के पहले कुल्ल-ए-शय के नौवें वाहिद का समापन। हम पूर्व और पश्चिम के बहाईयों का आह्वान करते हैं कि उस शुभ अवसर पर ऐसी व्यवस्था को अपनाएँ जो बदी कैलेण्डर को सार्वजनिक रूप से लागू कर उन्हें एकसूत्र में पिरो दे।

बहाई शिक्षाओं के क्रमिक प्रकाशन और इन्हें प्रगतिशील रूप से लागू करने के सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए बदी कैलेण्डर की व्यवस्था को समयानुकूल लागू किया गया है। बाब ने इस कैलेण्डर और इसके कालों और चक्रों, महीनों और दिनों का परिचय कराया। बहाउल्लाह ने आवश्यक स्पष्टीकरण और परिवर्धन किया, विभिन्न पहलुओं की व्याख्या अब्दुल-बहा द्वारा दी गई और पश्चिम में इसे अपनाने की व्यवस्था शोग़ी एफ़ेन्दी के निर्देशानुसार की गई, जैसा कि ’द बहाई वल्र्ड‘ नामक संकलनों में वर्णित है। अभी भी, कुछ इस्लामिक और ग्रेगोरियन तारीखों में पाई जाने वाली विसंगतियों तथा ऐतिहासिक धर्मानुष्ठानों और खगोलीय घटनाओं का पावन लेख में मिलने वाले सुस्पष्ट विवरण से मिलान करने में आने वाली कठिनाइयों ने कुछ प्रश्नों को अनुत्तरित छोड़ दिया है। जब कैलेण्डर सम्बन्धी प्रश्न अब्दुल-बहा और शोग़ी एफ़ेन्दी से पूछे गये तब उन्होंने इस विषय को विश्व न्याय मंदिर के लिये छोड़ दिया। कैलेण्डर के उपयोग में एकरूपता के लिये इसकी अनेक विशेषताओं में तीन का स्पष्टीकरण यहाँ आवश्यक जान पड़ता है: नवरोज के निर्धारण का आधार, पावन युगल जन्म-जयंतियों के चंद्र स्वरूप का सौर वर्ष में समायोजन और बदी कैलेण्डर के अन्तर्गत पावन दिनों की तिथियों का निर्धारण।

बहाउल्लाह अपनी परम पावन पुस्तक में लिखते हैं: “नवरोज का त्यौहार उस दिन पड़ता है जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है, भले ही यह प्रवेश सूर्यास्त से एक मिनट पूर्व ही क्यों न हो।” किन्तु इसका विस्तृत विवरण अब तक अपरिभाषित छोड़ दिया गया है। हमने निर्णय लिया है कि तेहरान, आभा सौन्दर्य का जन्म-स्थान, धरती पर वह मानदण्ड निर्धारित करने वाला स्थान होगा जो विश्वस्त सूत्रों से प्राप्त खगोलीय गणना के आधार पर उत्तरी गोलार्ध में वसंत सम्पात का दिन होगा और वह इस पूरे बहाई जगत के लिये नवरोज का दिन होगा।

युगल जन्म दिनों, बाब का जन्म और बहाउल्लाह का जन्म, के त्यौहार पूर्व में पारम्परिक ढंग से इस्लामिक कैलेण्डर में मुहर्रम के पहले और दूसरे दिन मनाये जाते हैं। बहाउल्लाह इस बात की पुष्टि करते हैं कि “ईश्वर की नज़र में ये दो दिवस एक माने गये हैं।” किन्तु, धर्मसंरक्षक की ओर से लिखे गये एक पत्र में कहा गया है, “इसमें संदेह नहीं कि भविष्य में सभी पावन दिवस सोलर कैलेण्डर (सौर पंचाग) के अनुसार होंगे और यह व्यवस्था की जायेगी कि किस प्रकार पूरे विश्व में युगल त्यौहार मनाये जाएँगे।” अभी तक यह प्रश्न अनुत्तरित रहा है कि किस प्रकार इन पावन दिवसों के अन्तर्भूत चंद्र स्वरूप को सौर कैलेण्डर के संदर्भ में रखा जाये। हमने निर्णय किया है कि इन्हें नवरूज के बाद आठवें नये चाँद के पहले और दूसरे दिन मनाया जायेगा, जिसका निर्धारण तेहरान को केन्द्र बिन्दु मानकर खगोलीय पद्धति द्वारा पहले ही कर लिया जायेगा। इसका परिणाम यह होगा कि साल-दर-साल ये युगल जन्म-जयंतियाँ बदी कैलेण्डर के मशीयत, इल्म और कुदरत महीनों के बीच मनायी जाएँगी अथवा यूं कहें, ग्रेगोरियन कैलेण्डर के मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर के बीच। अगले साल बाब का जन्मदिवस 10 कुदरत को पड़ेगा और बहाउल्लाह का जन्म दिवस 11 कुदरत को। अत्यंत हर्ष और प्रत्याशा के साथ हम बहाई वर्ष 174 और 176 में क्रमशः बहाउल्लाह और बाब के जन्म की द्विशतवार्षिक जयंतियों की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जिसे समस्त बहाई जगत एक समान कैलेण्डर के अनुसार मनायेगा।

शेष बहाई पवित्र दिवसों की तारीखें सौर कैलेण्डर के अधीन बहाउल्लाह, अब्दुल-बहा और शोग़ी एफ़ेंदी के सुस्पष्ट वक्तव्यों के अनुकूल तय की जाएँगी; इतिहास में दर्ज कुछ विसंगतियों को हमने दरकिनार कर दिया है। ये तारीखें हैं: नवरोज - 1 बहा, रिजवान का त्यौहार - 13 जलाल से 5 जमाल, बाब का घोषणा दिवस - 8 अजमत, बहाउल्लाह का स्वर्गारोहण - 13 अजमत, बाब का शहादत दिवस - 17 रहमत, संविदा-दिवस - 4 कौल, और अब्दुल-बहा का स्वर्गारोहण - 6 कौल।

इन प्रावधानों के कारण जब तक रद्द नहीं किये जाते तब तक कैलेण्डर के लिये और उन्नीस दिवसीय सहभोज सभाओं तथा पवित्र दिनों को मनाने से सम्बन्धित पहले दिये गये मार्गनिर्देश तथा स्पष्टीकरण यथावत लागू रहेंगे, जैसे दिन की शुरुआत सूर्यास्त के बाद, काम बंद रखना और वे घड़ियाँ (घंटे) जब कुछ पावन दिनों को मनाया जाता रहा है। भविष्य में परिस्थितिजन्य कारणों से कुछ अतिरिक्त कदम उठाने की जरुरत पड़ सकती है।

प्रस्तुत किये गये निर्णयों से स्पष्ट होगा कि पूरब और पश्चिम के बहाई कैलेण्डर के कुछ भागों को उस कैलेण्डर से अलग पाएँगे जिनके वे अभ्यस्त हो चुके हैं। बदी कैलेण्डर की तारीखों का अन्य कैलेण्डरों के साथ मेल अब नवरोज की तिथि के अनुसार बदल जायेगा। अय्याम-ए-हा के दिनों की संख्या भी आने वाले सालों में वसंत सम्पात के समय के अनुसार बदलेगी। नवरोज़ के साथ शुरू होने वाले 172वें बहाई वर्ष में ऐसे चार दिन होंगे। बाद में सभी राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को बहाई विश्व केन्द्र में तैयार की गई तालिका प्रेषित की जायेगी जिसमें आने वाली आधी शताब्दी के लिये नवरोज़ और पावन युगल जन्म-जयंतियों की तारीखें दर्ज़ की होंगी।

प्रत्येक युग में एक नये कैलेण्डर को अपनाना दिव्य प्रकटीकरण द्वारा भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वास्तविकताओं को पुनर्गठित करने की शक्ति का प्रतीक है। इसके माध्यम से पवित्र पलों की पहचान बनती है, समय और अन्तरिक्ष में मानव का स्थान परिकल्पित होता है और जीवन-तरंग पुनर्तरंगित होती है। अगले नवरोज़ में बहा के लोगों की एकता को दर्शाने और बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था को प्रकाशित करने की दिशा में एक और ऐतिहासिक चरण से परिचय होगा।

-विश्व न्याय मंदिर

**cgkbZ dSys.Mj] R;ksgkj vkSj ,sfrgkfld egRo dh rkjh[ksa**

¼ts-bZ- ,lyekSaV dh iqLrd ÞcgkmYykg ,.M n U;w ,jkß ds va”k½

vyx&vyx yksxksa }kjk] vyx&vyx dkyksa esa le; dks ekius vkSj rkjh[kksa dks r; djus dh vyx&vyx iz.kkfy;k¡ viukbZ xbZ gSaA vHkh Hkh nSfud bLrseky esa fofHkUu dSys.Mj gSa] elyu & xzsxksfj;u if”peh ;wjksi esa] iwohZ ;wjksi ds vusd ns”kksa esa tqfy;u] ;gwfn;ksa ds chp fgczw vkSj eqfLye ns”kksa esa eqgEenhA

ckc ftl ;qx ds vxznwr gSa ml ;qx ds egRo dk ladsr nsrs gq;s mUgksaus ,d u;s dSys.Mj dk Jhx.ks”k fd;kA tSlk fd xzsxksfj;u dSys.Mj esa gS] pUnz ekg dks R;kx lkSj o’kZ dks viuk;k x;kA

,d cgkbZ o’kZ 19 eghuksa dk gksrk gS vkSj ,d eghuk 19 fnuksa dk ¼vFkkZr~ 361 fnuA bu 361 fnuksa esa vf/kfnol ¼pkj lkekU; rkSj ij vkSj ik¡p vf/ko’kZ esa½ vBkjgosa vkSj mUuhlosa eghus ds chp tksM+dj lkSj o’kZ ds vuq:i dSys.Mj ls esy djk;k x;k gSA ckc us eghus ds uke bZ”oj ds xq.kksa ds vk/kkj ij fn;sA izkphu Qkjlh uoo’kZ dh rjg cgkbZ uoo’kZ [kxksyh; vk/kkj ij r; fd;k x;k tks ekpZ ds olar lEikr ¼21 ekpZ½ dks fu/kkZfjr fd;k x;k vkSj cgkbZ ;qx dk lekjEHk ckc dh ?kks’k.kk o’kZ ds lkFk ekuk x;k] vFkkZr~ lu 1844] 1260 ,-Mh-A

Hkfo’; esa ;g vko”;d gks tk;sxk fd nqfu;k ds lHkh yksx ,d leku dSys.Mj ij lger gksaA

vr% ;g mi;qDr tku iM+rk gS fd ,drk ds u;s ;qx ds fy;s ,d u;k dSys.Mj gks] tks fdlh izdkj dh vkifRr vkSj udy ls eqDr gks ftl dkj.k nqfu;k dh cgqr cM+h vkcknh }kjk ,d izdkj dk dSys.Mj vHkh rd ugha iz;ksx esa yk;k tk ldkA ;g le> ikuk eqf”dy gS fd fdl izdkj dksbZ vU; O;oLFkk lknxh vkSj ljyrk esa ckc }kjk fn;s x;s cgkbZ dSys.Mj ls vf/kd lqfo/kktud vkSj vPNh gks ldrh gSA

**cgkbZ lgHkkst okf’kZdksRlo vkSj miokl ds fnu**

fjt+oku dk R;ksgkj & ¼cgkmYYkkg dh ?kks’k.kk & 21 vizSy & 2 ebZ ¼1863½

uojkst+ dk R;ksgkj & ¼uoo’kZ½ 21 ekpZ

ckc dh ?kks’k.kk & 23 ebZ ¼1844½

lafonk fnol & 26 uoEcj

cgkmYykg dh tUe&t;arh & 12 uoEcj ¼1817½

ckc dh tUe&t;arh & 20 vDVwcj ¼1819½

vCnqy&cgk dk tUe & 23 ebZ ¼1844½

cgkmYykg dk LoxkZjksg.k & 29 ebZ ¼1892½

ckc dh “kgknr & 9 tqykbZ ¼1850½

vCnqy&cgk dk LoxkZjksg.k & 28 uoEcj ¼1921½

miokl ds 19 fnu gksrs gSa] ftldh “kq:vkr \*vyk^ ekg ds igys fnu ls gksrh gSA 19 fnuksa ds miokl ds rqjar ckn cgkbZ uoo’kZ ¼uojkst+½ dk R;ksgkj euk;k tkrk gSA

**cgkbZ ikou fnol tc dke ls vodk”k fy;k tkrk gSA**

fjtoku dk igyk fnu

fjtoku dk ukSoka fnu

fjtoku dk ckjgoka fnu

ckc dh ?kks’k.kk dk okf’kZdksRlo

cgkmYykg dh tUe&t;arh dk okf’kZdksRlo

ckc dh tUe&t;arh dk okf’kZdksRlo

cgkmYykg ds LoxkZjksg.k dh okf’kZdh

ckc dh “kgknr dh okf’kZdh

uojkst+ dk R;ksgkj

uksV % vCnqy&cgk us usjht+] Qkjl ds ,d vuq;k;h dks lEcksf/kr ikrh esa fuEukafdr va”k fy[kk gS %

o’kZ ds ukS fnu ,sls gSa tc dke ij tkuk oftZr gSA ikou iqLrd esa buesa ls dqN fnuksa dh ppkZ [kkl rkSj ij dh xbZ gSA lafonk fnol ¼vCnqy&cgk ds tUefnu½ esa dke djus dh eukgh ugha gSA bl fnol dk mRlo eukuk fe=ksa dh bPNk ij NksM+ fn;k x;k gSA bl fnol dks eukuk vfuok;Z ugha ekuk x;k gSA cgkmYykg vkSj ckc ls lEcfU/kr fnolksa ds fnu O;kikj] dk;Z] m|ksx] Ñf’k vkfn ds dke ls vodk”k ysuk pkfg;sA blh izdkj] fdlh Hkh izdkj dh ukSdjh] ljdkjh ;k fQj dksbZ vU; ukSdjh djus okys Hkh vodk”k ij jgsaA

bl ikrh ds vuqlkj vCnqy&cgk ds tUe vkSj LoxkZjksg.k ds fnuksa esa Hkh vodk”k ysus dh t:jr ugha gSA fdUrq] bu fnuksa esa fo”ks’k vk;kstu vfuok;Z gSaA

iwoZ vkSj if”pe esa iz”kklfud inksa ij dke djus okys cgkbZ] ljdkjh ukSdjh esa gksa ;k fQj futh dEifu;ksa esa] fo”ks’k vodk”k ds fy;s vkosnu djsaA

**cgkbZ dSys.Mj ls lEcfU/kr ÞuchYl ujsfVoß ls p;fur vfrfjDr lkexzh** cnh dSys.Mj ¼cgkbZ dSys.Mj½ geus ckc dh iqLrd Þfdrkc&,&vLekß ls fy;k gSA tSlk fd bu fnukas geus ns[kk gS fd dqN vuq;k;h cgkmYYkkg ds cxnkn ls dkSLVSafVuksiy ds fy;s izLFkku djus ds fnu dks cnh dSys.Mj dh “kq:vkr dk fnu ekuus yxs gSaA geus fetkZ vkdk tku] cgkmYykg ds fyfid] ls fuosnu fd;k fd og bl lEcU/k esa cgkmYYkkg dh bPNk ls gesa voxr djk;saA cgkmYYkkg us mRrj fn;k vkSj dgk] Þo’kZ lkB ,-,p- ¼1844½] ckc ds ?kks’k.kk dk o’kZ vo”; gh cnh dSys.Mj dh “kq:vkr dk o’kZ ekuk tk;sAß ckc dh ?kks’k.kk 1260 ,-,p- o’kZ ds tekfn;qy&vOoy ds ik¡pos fnu ds igys okyh “kke gqbZ FkhA ;g vkns”k fn;k x;k gS fd lkSj dSys.Mj dks ekU;rk nh tk;s vkSj olar lEikr ds fnu uo:t+] cgkbZ dSys.Mj ds uo o’kZ dk igyk fnuA bl izdkj lkB ds o’kZ ds tekfn;qy&vOoy dk ik¡poka fnu uojkst+ ds iSlBosa fnu iM+rk gS vkSj ogh cnh dSys.Mj dk igyk o’kZ ekuk tk;sxkA

---vDdk ds fdys dks NksM+us ds rqjar ckn tc cgkmYykg efyd ds ?kj esa jg jgs Fks] mUgksaus eq>s vkns”k fn;k fd eSa cnh dSys.Mj dh izfrfyfi rS;kj d:¡ vkSj bl lEcU/k esa vuq;kf;;ksa dks foLrkj ls funsZ”k nwaA mlh fnu] ftl fnu eSaus mudk vkns”k izkIr fd;k] eSaus xn~; vkSj in~; esa dSys.Mj dh [kkl&[kkl ckrksa dks dyec) fd;k vkSj muds le{k izLrqr fd;kA in~; esa rS;kj dh xbZ izfr vc miyC/k ugha gS] blfy;s ;gka eSa xn~; esa vuqeksfnr izfr izLrqr dj jgk gw¡A lIrkg ds fnuksa dk ukekadj.k bl izdkj fd;k x;k gS %

**fnu vjch uke fgUnh vuqokn izpfyr fgUnh uke**

igyk tyky izrki “kfuokj

nwljk teky lkSan;Z jfookj

rhljk deky iw.kZrk lkseokj

pkSFkk fQnky Ñik eaxyokj

ik¡pok¡ bZnky U;k; cq/kokj

NBk bfLrtyky vkf/kiR; xq:okj

lkroka bfLrdyky Lora=rk “kqØokj

**eghuksa ds uke**

**ekg vjch uke fgUnh vuqokn igyk fnu**

igyk cgk Hkk% 21 ekpZ

nwljk tyky izrki 09 vizSy

rhljk teky lkSan;Z 28 vizSy

pkSFkk vt+er ,s”o;Z 17 ebZ

ik¡pok¡ uwj T;ksfr 05 twu

NBk jger n;k 24 twu

lkroka dyhekr “kCn 13 tqykbZ

vkBok¡ deky iw.kZrk 01 vxLr

ukSoka vLek uke 20 vxLr

nloka bTt+r lkeF;Z 08 flrEcj

X;kjgoka e”kh;r bPNk 27 flrEcj

ckjgoka bYe Kku 16 vDVwcj

rsjgoka dqnjr “kfDr 04 uoEcj

pkSngoka dkSy ok.kh 23 uoEcj

iUnzgoka elkby iz”u 12 fnlEcj

lkSygoka “kjQ lEeku 31 fnlEcj

l=goka lqYrku izHkqRo 19 tuojh

vBkjgoka eqYd izkf/kdkj 07 Qjojh

mUuhloka vyk mPprk 02 ekpZ

v¸;ke &,&gk ¼vf/kfnol½ 26 Qjojh ls 1 ekpZ ¼4 lkekU; :i ls vkSj 5 vf/ko’kZ esa½

ckc us 365 fnu] 5 ?kaVs vkSj 50 feuV ds ,d lkSj o’kZ dks ekU;rk nh gS] ftlesa 19 fnuksa ds 19 eghuksa dk izko/kku gSA buesa vf/kfnolksa dks tksM+ fn;k x;k gSA mUgksaus u;s lky ds igys fnu dks Hkk% ¼cgk½ dk fnu dgk gS] tks uojkst+ dk fnu gSA mUgksaus vyk ekg dks miokl dk eghuk dgk gS vkSj vkns”k fn;k gS fd uojkst+ dk fnu ml dh lekfIr dk lwpd gksxkA pwafd ckc us cnh dyS.Mj esa pkj vf/kfnolksa vkSj fnu ds dqN izgjksa dk dksbZ LFkku fu/kkZfjr ugha fd;k Fkk] c;ku ds yksx ;g ugha le> ik jgs Fks fd mUgsa dgka j[kk tk;sA bl leL;k dk lek/kku vDdk esa \*fdrkc&,&vdnl\* ds izdVhdj.k ds ckn fey x;kA cgkmYykg us mu fnuksa dks vf/kfnol dh laKk nh vkSj vkns”k fn;k fd os fnu vyk ekg ds rqjar igys j[ksa tk;sa] tks miokl dk eghuk gSA mUgksaus vius vuq;kf;;ksa dks vkns”k fn;k fd ;s vf/kfnol nku nsus] mYykl eukus vkSj ijksidkj ds dk;ksZa esa fcrk;sa tk;saA lkFk gh] mUgksaus vkns”k fn;k fd bu vf/kfnolksa ds rqjar ckn miokl dk eghuk izkjEHk gks tk;sxkA eSaus yksxksa dks ;g dgrs lquk gS fd \*c;ku^ ds dqN yksx] tks fetkZ ;kg~;k ds vuq;k;h Fks] vf/kfnol vyk ekg ds rqjar ckn j[k fy;k djrs Fks] ftlls miokl ds pkj&ikap fnu de gks tkrs FksA ;g \*c;ku^ esa fn;s x;s dSys.Mj ds vuqdwy ugha Fkk] ftlesa dgk x;k gS fd uojkst+ vo”; gh cgk ekg dk igyk fnu gksxk vkSj vo”; gh vyk ekg ds vafre fnu ds rqjar ckn euk;k tk;sA nwljs tks bl fojks/kkHkkl ls ifjfpr Fks] viuk miokl vyk ekg ds ikaposa fnu ls gh “kq: dj nsrs Fks vkSj vf/kfnolksa dks miokl ds fnuksa esa “kkfey dj fn;k djrs FksA gj pkSFks o’kZ vf/kfnolksa dh la[;k pkj ls ik¡p gks tkrh gSA uojkst+ dk fnu 21 ekpZ dks gh iM+rk gS] vxj olar lEikr lw;kZLr ds ckn gksrk gS rks vxys fnu uojkst+ euk;k tk;sxkA

blds vykok] ckc us vjch Hkk’kk esa izdfVr ys[kksa esa vius mn~?kks’k dh rkjh[k ls o’kksZa dks 19 o’kksZa ds pØ esa foHkkftr fd;k gSA izR;sd pØ esa o’kksZa ds uke bl izdkj fn;s gSa %

1- vfyQ , 2- cs ch 3- vc firk

4- nky Mh 5- ckc }kj 6- oko oh

7- vcn “kk”or 8- tsn mnkjrk 9- cgk HkO;rk

10- gCCk izse 11- cg~gkt vkuUn 12- tokc mRrj

13- vgn ,dkdh 14- cg~gkc mnkjrk 15- fonkn vuqjkx

16- cnh vkjEHk 17- ckgh iznhIr 18- vkHkk iw.kZ izdkf”kr

19- okfgn ,drk

mUuhl lkyksa dk ,d pØ okfgn dgykrk gSA mUuhl pØksa esa ;ksx dks dqYy&,&”k; dgrs gSaA okfgn “kCn dk lkaf[;d ewY; mUuhl gS vkSj dqYy&,&”k; dh 361A okfgn ,drk dk n~;ksrd gS vkSj gS bZ”oj dh ,drk dk izrhdA

ckc us dgk gS fd mudh ;g iz.kkyh mudh LohÑfr ij fuHkZj djrh gS ÞftUgsa bZ”oj izdV djsxkßA mudh vksj ls dgk x;k ,d “kCn bls lHkh dkyksa ds fy;s LFkkfir djus ds fy;s i;kZIr gksxk vFkok lnk ds fy;s jn~n dj nsxkA

mnkgj.k ds fy;s 21 vizSy] 1930 dh rkjh[k] tks fjt+oku dk igyk fnu gS vkSj tks Þfdrkc&,&vdnlß ds vuqlkj vo”; gh nwljs cgkbZ ekg dk rsjgoka fnu gksuk pkfg;s vkSj tks bl lky ¼1930 esa½ lkseokj ds fnu iM+k] cnh dSys.Mj ds vuqlkj bl izdkj of.kZr fd;k tkuk pkfg;s % Þdeky dk fnu] igys dqYy&,&”k; ds ik¡posa okfgn o’kZ cg~gkt ds tyky ekg ds dqnjr dk fnuAß

**cgkbZ frfFk;k¡**

172] ch-bZ- ¼2015&2016½

**cgkbZ frfFk xzsxksfj,u dyS.Mj ds vuqlkj**

**lgHkkst frfFk;k¡**

cgk ¼Hkk%½ 1 cgk 21 ekpZ 2015

tyky ¼izrki½ 1 tyky 09 vizSy

teky ¼lkSUn;Z½ 1 teky 28 vizSy

vter ¼,s”o;Z½ 1 vter 17 ebZ

uwj ¼T;ksfr½ 1 uwj 05 twu

jger ¼n;k½ 1 jger 24 twu

dfyekr ¼”kCn½ 1 dfyekr 13 tqykbZ

deky ¼iw.kZrk½ 1 deky 01 vxLr

vlek ¼uke½ 1 vlek 20 vxLr

bTtr ¼lkeF;Z½ 1 bTtr 08 flrEcj

e”kh;r ¼bPNk½ 1 e”kh;r 27 flrEcj

bYe ¼Kku½ 1 bYe 16 vDVwcj

dqnjr ¼”kfDr½ 1 dqnjr 04 uoEcj

dkSy ¼ok.kh½ 1 dkSy 23 uoEcj

elkby ¼iz”u½ 1 elkby 12 fnlEcj

“kjQ ¼lEeku½ 1 “kjQ 31 fnlEcj

lqYrku ¼izHkqRo½ 1 lqYrku 19 tuojh 2016

eqYd ¼izkf/kdkj½ 1 eqYd 07 Qjojh

vyk ¼mPprk½ 1 vyk 01 ekpZ

**ifo= fnol**

uo&jkst+ 1 cgk 21 ekpZ 2015

fjt+oku dk igyk fnu 13 tyky 21 vizSy

fjt+oku dk uoka fnu 2 teky 29 vizSy

fjt+oku dk ckjgoka fnu 5 teky 02 ebZ

ckc dh mn~?kks’k.kk 8 vter 24 ebZ

cgkmYykg dk LoxkZjksg.k 13 vter 29 ebZ

ckc dk “kghn fnol 17 jger 10 tqykbZ

ckc dk tUe fnol 10 dqnjr 13 uoEcj

cgkmYykg dk tUe fnol 11 dqnjr 14 uoEcj

lafonk dk fnol 4 dkSy 26 uoEcj

vCnqy&cgk dk LoxkZjksg.k 6 dkSy 28 uoEcj

**vU; vk;kstu**

v¸;ke&,&gk 1 ls 4 v¸;ke&,&gk 26 ls 29 Qjojh 2016

miokl ds fnu 1 ls 19 vyk 01 ls 19 ekpZ 2016

uksV % cgkbZ fnu dk var vkSj u;s fnu dh “kq:vkr lw;kZLr ds lkFk gksrh gS( ifj.kker% ftl fnu lgHkkst lHkk vFkok cgkbZ ifo= fnol euk;k tkrk gS og fnu xzsxksfj;u dSys.Mj dh rkjh[k ds ,d fnu iwoZ lw;kZLr ds lkFk “kq: gks tkrk gSA uojkst+] blds vuqlkj 20 ekpZ 2016 dks euk;k tk;sxkA